कृषिवानिकी
Agroforestry
समाचार पत्र
Newsletter
राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झाँसी
National Research Centre for Agroforestry, Jhansi

जनवरी – मार्च, 2002
अंक 14, संख्या 1

January - March, 2002
Vol.14, No.1

क्यू. आर. टी. बैठक

केन्द्र में 13 से 15 फरवरी, 2002 तक द्वितीय क्यू. आर. टी. (1996-2001) की बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता डा. पी. के. खोसला, मुख्य सलाहकार (जैव तकनीकी), हिमाचल प्रदेश सरकार, शिमला ने किया। बैठक में डा. ओ. पी. पारीख, विशिष्ठ वैज्ञानिक, राष्ट्रीय मरू उद्यानिकी अनुसंधान संस्थान, बीकानेर, डा. एम.एस. कैरों, भूतपूर्व निदेशक, केन्द्रीय

कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर, डा. सुनील पुरी, प्रो. एवं अध्यक्ष, वानिकी विभाग, इन्दिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर तथा डॉ. पी. राय, कार्यवाहक निदेशक, राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुंसधान केन्द्र, झांसी तथा सदस्य सचिव ने भाग लिया। संस्थान के अनुसंधान कार्यक्रमों की समीक्षा की गई तथा सभी सदस्यों ने केन्द्र पर तथा किसानों के खेतों पर किये जा रहे परीक्षणों का अवलोकन किया एवं वैज्ञानिकों द्वारा बताये गये परिणामों पर गहन चर्चा हुई।

Quinquennial Review Team (QRT) Meeting

The Second QRT (1996-2001) meeting was held during 13-15 February, 2002 under the chairmanship of Dr. P.K. Khosla, Sr. Advisor (Biotechnology), Govt. of Himachal Pradesh, Shimla. Dr. O.P. Pareek, Eminent Scientist, NRC for Arid Horticulature, Bikaner, Dr. M.S. Kairon, Ex.

Director, CICR, Nagpur, Dr. S. Puri, Prof. & Head, Department of Forestry, IGAU, Raipur and Dr. P. Rai, Acting Director, NRCAF and member secretary of the team attended the meeting. The QRT reviewed the research programmes of NRCAF and also visited on farm as well as on station trials of the Centre and discussed in depth the results presented by the scientists.

स्टाफ रिसर्च काउन्सिल की प्रक्षेत्र भ्रमण

इस केन्द्र की स्टाफ रिसर्च काउन्सिल के सदस्यों द्वारा परीक्षण प्रक्षेत्र का भ्रमण दिनांक 19 से 20 फरवरी, 2002 तक डा. पी. राय, कार्यवाहक निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस भ्रमण में केन्द्र में चल रही परियोजनाओं का आलोचनात्मक पुनरिक्षण किया गया। केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिकों, वरिष्ठ वैज्ञानिकों तथा वैज्ञानिकों ने भ्रमण में भाग लिया। भ्रमण के दौरान दिये गये सुझावों को भविष्य के अनुसंधान के कार्यक्रमों में सम्मिलित किया जायेगा।

Staff Research Council Field Visit

The memeber of Staff Research Council visited the experimental field during 19-20 February, 2002 under the chairmanship of Dr. P. Rai, Acting Director, NRCAF. Ongoing projects of the Centre were critically discussed and reviewed. All the Pr. Scientists, Sr. Scientists and Scientists participated in the visit. The suggestion made during the visit shall be implemented in the future research programme.

किसान गोष्ठी

राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुंसधान केन्द्र, झाँसी द्वारा 7 मार्च, 2002 को बबीना ब्लाक के नया खेड़ा ग्राम, जिला झाँसी में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता केन्द्र के कार्यवाहक निदेशक डा. पी. राय ने की। किसान गोष्ठी के अध्यक्ष ने कृषिवानिकी का महत्व, स्वरोजगार की प्रमुखता व उपयोगिता को गाँव के लोगों व युवाओं को अवगत कराया। श्री मुन्ना राम, डा. अनिल कुमार, डा. राम नेवाज, डा. के. करीमूल्ला, डा. आर. के. तिवारी तथा श्री यू.पी. सिंह किसान गोष्ठी के मुख्य वक्ता थे। प्रश्नोत्तर काल में इस क्षेत्र के किसानों द्वारा उद्यानिकी वृक्षों को उगाने में अपनी इच्छा जताई। गोष्ठी का संचालन डा. आर. पी. द्विवेदी, वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) कृषि प्रसार ने किया।

Kisan Gosthi

The Centre orgainsed Kisan Gosthi on 7th March, 2002 at village Naya Khera, Babina Block, Distt. Jhansi under the chairmanship of Dr. P. Rai, Acting Director, NRCAF, Jhansi. The chairman of Kisan Gosthi emphasized the importance and utility of the agroforestoy for self empolyment of the villagers and farmer youths. Sh. Munna Ram, Dr. R. Newaj, Dr. Anil Kumar, Dr. R.K. Tiwari, Dr. K. Kareemulla and Sh. U.P. Singh were the speakers of the Kisan Gosthi. During question - answer session the farmers have shown keen interest regarding horticultural trees. The programme was conducted by Dr. R.P. Dwivedi, Scientist (Sr. Scale) Extension.

निदेशक की कलम से

जनसंख्या व पशुओं की बढ़ती हुई आवादी को देखते हुये यह जरूरी हो गया है कि ज्यादा से ज्यादा भूमि खेती के लिये बढ़ाई जा सके जिससे कि खाद्यान्न, चारा, सब्जी, जलाऊ व इमारती लकड़ी दवायें आदि की मॉग को पूरा किया जाये। जनसंख्या दबाव के कारण हमको अपारम्परिक तरीके की खेती को अपनाकर भूमि को ज्यादा से ज्यादा उपयोग में लाना पड़ेगा। इसलिये, भूमि की कमी को देखते हुये उत्पादकता को बढ़ाने के लिये बहुआयामी खेती को खोजना जरूरी हो गया है। कृषिवानिकी एक ऐसी विधि/तरीका है जिसके द्वारा उत्पादकता को बढ़ाने के साथ-साथ वातावरण में विभिन्न गैसों में सामन्जस्य को बनाये रखा जा सकता है। कृषिवानिकी पद्धति का चुनाव व प्रबधन को

प्रयोग में लाने से भूमि व वनस्पति मे कार्बन और नत्रजन की मात्रा प्रभावित होती है। कृषिवानिकी पद्धति के प्रबंधन से विभिन्न प्रकार की गैसों को नियंत्रित किया जा सकता है जैसे वृक्षों में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा को क्रमबद्ध व बहुवर्षीय वनस्पति व मृदा में कार्बन व नत्रजन को नियंत्रित कर सकते है। खाद्यान्न उत्पादन, चारा, जलाऊ लकड़ी, भूसा को जीवाश्म बनने से रोककर वातावरण प्रदूषण तथा भूमि सुधार के लिये कृषिवानिकी सबसे अच्छा माध्यम है।

आज की अवस्था में कृषिवानिकी, वानिकी, पारिस्थितिकी, पादय दैहिकी तथा नीति निर्धारिकों का मुख्य कर्तव्य है कि कृषिवानिकी कार्यक्रम को अपना कर उत्पादन बढ़ाया जाये जिससे कि कृषि हेतु उपलब्ध भूमि में कृषिवानिकी पद्धति द्वारा मृदा क्षरण व मृदा की उत्पादकता को सुधारा जा सके और वृक्षों के साथ-साथ उगाई जाने वाली फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने हेतु उचित व अच्छा वातावरण तैयार किया जा सकता है।

From the Director's Desk

Increase in human and live stock population necessitated to put more and more land under cultivation to meet the ever increasing demand for food, fodder, vegtables, fuel wood, timber, medicines, etc. Further, demographic pressure has forced man to seek unconventional methods of agriculature to utilize land to the maximum extent. Therefore, in the quest of optimising productivity, the multitier system came into existence. It is worth nothing that Agroforestry systems can be sources or sinks of green house gases depending on the components of the system and its management practices affect the spatial temporal flux of carbon and nitrogen reservoirs in soil and vegetation. Agroforestry systems can be managed to stablize green house gases in three ways *viz.* Sequestering carbon dioxide in plants and storing carbon and nitrogen in perennial vegetation and soils for long period, producing food, fodder, fuel, fibre etc. to suppress deforestation and sustained production of biofuels such as fuels wood and crop stems, roots, leaves etc. brings down the consumption of fossil fuels which are the major source of green house effect and pollution.

In the present situation it is the first and foremost duty of agroforesters, foresters, ecologists, plant physiologists and policy makers to launch agroforestry programmes in states where suitable land for such system is available due to its apparent high potential to control soil erosion, soil improvement, creating congenial microclimate for trees and understorey vegetation and reduction in the accumulation of green house gases in the atmosphere.

(P.Rai)

मानव संसाधन विकास

- डा. अजीत, वैज्ञानिक (कृषि सांख्यिकी) एवं डा. ए.के. हान्डा, वैज्ञानिक (वानिकी) ने भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में एन.ए.टी.पी. प्रोजेक्ट के अन्तर्गत ''फाइनल रिक्वायरमेन्ट एनलाइसिस कार्यशाला'' 8-10 जनवरी, 2002 में भागीदारी की।

- डा. वी. के. गुप्ता, प्रधान वैज्ञानिक तथा श्री मुन्ना राम, प्रधान वैज्ञानिक ने भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में आयोजित प्रशिक्षण ''कार्यक्रम वीजिलेन्स अवेयरनेस ट्रेनिंग'' 18-21 जनवरी, 2002 में भागीदारी की।

- ई. रमेश सिंह, वैज्ञानिक ने सी. एस.एस. आई. आर. करनाल में आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ''एग्रीकल्चरल वाटर मैनेजमेंन्ट'' 7-27 फरवरी, 2002 में भागीदारी की।

- डा. अजीत, वैज्ञानिक (कृषि सांख्यिकी) ने भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में प्रशिक्षण कार्यक्रम ''डिजाइनिंग वोरटाल्स फार एन.ए.आर.एस.'' 6-26 फरवरी, 2002 में भागीदारी की।

Human Resource Development

- Dr. Ajit, Scientist (Agrl.Statistics) and Dr. A.K. Handa, Scientist (Forestry) of the Centre participated in the "Final Requirement Analysis Workshop" of NATP-INARIS project at IASRI, New Delhi during 8-10 January, 2002.

- Dr. V.K. Gupta, Pr. Scientist (Tree Breeding) and Sh. Munna Ram, Pr. Scientists (Soil Science) of the Centre participated in the "Vigilance Awareness Training Programme" at IISR, Lucknow during 18-21 January, 2002 orgainsed by ICAR, New Delhi.

- Er. Ramesh Singh, Scientist (SWC) participated in the National Training Course on "Agricultural Water Management" organised at CSSRI, Karnal during 7-27 January, 2002.

- Dr. Ajit, Scientist (Agrl.Statistics) participated in the Training Course on "Designing VORTALS for NARS" at IASRI, New Delhi during 6-26 February, 2002.

नये कार्यालय सदस्य

- डा. एस.पी. अहलावत ने केन्द्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक (पौध प्रजनन) के पद पर दिनांक 15 जनवरी, 2002 को कार्य ग्रहण किया।

- डा. ओ.पी. चतुर्वेदी ने केन्द्र में प्रधान वैज्ञानिक (वानिकी/कृषिवानिकी) के पद पर दिनांक 18 फरवरी 2002 को कार्य ग्रहण किया।

NEW STAFF MEMBERS

- Dr. S.P. Ahlawat, joined the Centre as Sr. Scientist (Pl. Breeding) on 15th January, 2002.
- Dr. O.P. Chaturvedi, joined the Centre as Pr. Scientist (Silviculture & Agroforestry) on 18th February, 2002.

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

केन्द्र में 20-22 मार्च,2002 को अनुसंधान सलाहकार समिति की छठी बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता डा. आर. वी. सिंह, भूतपूर्व महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान परिषद, देहरादून (उत्तरांचल) ने की। बैठक में डा. जे.पी. चन्द्रा, भूतपूर्व निदेशक, विमको, रूद्रपुर, प्रो. के. एस. नीलकंठन, (आई.एफ.एस.), डीन, वानिकी कालेज एवं अनुसंधान संस्थान, मेट्यूपलायम, तमिलनाडु, डा. के. आर. सोलंकी, सहायक महानिदेशक (कृषिवानिकी), कृषि भवन, नई दिल्ली तथा डॉ. पी. राय, कार्यवाहक निदेशक राष्ट्रीय कृषि वानिकी अनुसंधान केन्द्र एवं सदस्य सचिव ने भाग लिया। इस बैठक में राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान सलाहकार समिति ने कहा कि कृषिवानिकी के प्रारम्परिक पद्धतियाँ, जो कि विभिन्न क्षेत्रों के किसानों द्वारा अपनाई जा रही है, को क्रमबद्ध तरीके से संकलित करके प्रबंधित किया जाये जिससे कृषिवानिकी का विकास हो सके।

Research Advisory Committee Meeting

The sixth meeting of the Research Advisory Committee (RAC) was held at the Centre during 20-22 March, 2002 under the chairmanship of Dr. R.V. Singh, Ex. Director General (ICFRE), Dehradun (Uttranchal). The meeting was attended by Dr. J.P. Chandra, Ex. Director, WIMCO, Rudrapur, Distt. U.S. Nagar, Prof. K.S. Neelakantan, (IFS), Dean, Forest College and Research Institute, Tamil Nadu Agricultural University, Mettupalayam, Dr. K.R. Solanki, ADG(AF), ICAR, New Delhi and Dr. P. Rai, Acting Director, NRCAF, Jhansi and member secretory. RAC reviewed the research programme of NRCAF and recommanded the documentation of traditional agroforestry systems and the indigenous knowledge available with the farmers on the management practices in respect of different species grown by the farmers in different regions.

पदोन्नतियाँ

- डा. आर. पी. द्विवेदी, वैज्ञानिक (कृषि प्रसार) दिनांक 27 जुलाई 1998 से वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) के पद पर पदोन्नत हुये।
- डा. ए. के. हाण्डा, वैज्ञानिक (वानिकी) दिनांक 20 फरवरी, 1999 से वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) के पद पर पदोन्नत हुये।
- डा. आर. वी. कुमार, वैज्ञानिक (पादप प्रजनन) दिनांक 1 अप्रैल 1999 से वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) के पद पर पदोन्नत हुये।
- डा. ए. के. शंकर, वैज्ञानिक (पौध दैहिकी) दिनांक 21 जुलाई 1999 से वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) के पद पर पदोन्नत हुये।

Promotions

- Dr. R.P. Dwivedi, Scientist (Agrl. Extension) promoted to Scientist (Sr. Scale) w.e.f. 27 July, 1998.
- Dr. A.K. Handa, Scientist (Forestry) promoted to Scientist (Sr. Scale) w.e.f. 20 February, 1999.
- Dr. R.V. Kumar, Scientist (Pl. Breeding) promoted to Scientist (Sr. Scale) w.e.f. 1 April, 1999.
- Dr. A.K. Shankar, Scientist (Pl. Physiology) promoted to Scientist (Sr. Scale) w.e.f. 21 July, 1999.

- डा. अजीत वैज्ञानिक (कृषि सांख्यिकी) दिनांक 13 फरवरी, 2001 से वैज्ञानिक (वरिष्ठ वेतनमान) के पद पर पदोन्नत हुये।

- श्री यू. पी. सिह, टी-6 (तकनीकी अधिकारी) के पद के लिये पंचवर्षीय मूल्यांकन के आधार पर 10 अप्रैल, 2001 से पदोन्नत हुये।

- डा. ए. दत्ता, टी-6 (तकनीकी अधिकारी) के पद के लिये पंचवर्षीय मूल्यांकन के आधार पर 1 दिसम्बर, 2001 पदोन्नत हुये।

- श्री हबूलाल, क. आशुलिपिक, ए.सी.पी. योजना के अन्तर्गत आशुलिपिक पद पर 21 मार्च, 2002 से पदोन्नत हुये।

- श्री हेतराम (चालक), टी-2 (चालक) के पद के लिये पंचवर्षीय मूल्यांकन के आधार पर 21 जून, 2001 से पदोन्नत हुये।

- Dr. Ajit, Scientist (Agrl. Statistics) promoted to Scientist (Sr. Scale) w.e.f. 13 February, 2001.

- Sh. U.P. Singh, Technical Officer (T-5) promoted on the basis of five yearly assessment to the post of Technical Officer (T-6) w.e.f. 10 April, 2001.

- Dr. A. Datta, Technical Officer (T-5) promoted on the basis of five yearly assessment to the post of Technical Officer (T-6) w.e.f. 1 December, 2001.

- Sh. Hoob Lal, Jr. Stenro promoted under ACP Scheme to Steno w.e.f. 21 March, 2002.

- Sh. Het Ram, Driver pormoted to T-2 (Driver) on the basis of five yearly assessment w.e.f. 29 June, 2001.

विशिष्ट आगन्तुक

- डा. आर. एन. कौल, भूतपूर्व मुख्य वानिकी संरक्षक, अरुणाचल प्रदेश ने केन्द्र पर दिनांक 06.02.2002 को भ्रमण किया।

- डा. पी. के. खोसला (अध्यक्ष एन0 आर0 सी0 ए0 एफ0 क्यू0 आर0 टी0) वरिष्ठ सलाहकार, (जैव तकनीकी) हिमाचल प्रदेश सरकार, शिमला (हिमाचल प्रदेश) ने केन्द्र पर दिनांक 13.02.2002 को भ्रमण किया।

- डा. एस. पुरी, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वानिकी विभाग, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर (म.प्र.) ने केन्द्र पर दिनांक 13.02.2002 को भ्रमण किया।

- डा. ओ. पी. पारीख, विशिष्ठ वैज्ञानिक, केन्द्रीय शुष्क उद्यानिकी अनुसंधान संस्थान, बीकानेर (राजस्थान) ने केन्द्र पर दिनांक 13.02.2002 को भ्रमण किया।

Distinguished Visitors

- Dr. R.N. Kaul, Ex. Principal Chief Conservator of Forest, Arunachal Pradesh visited the Centre on 6.2.2002.

- Dr. P.K. Khosla, (Chairman, QRTof NRCAF) Sr. Advisor (Biotechnology), Government of Himachal Pradesh, Shimla (H.P.) visited the Centre on 13.02.2002.

- Dr. S. Puri, Prof. & Head, Indira Gandhi Agriculture Universtiy, Raipur (M.P.) visited the Centre on 13.02.2002.

- Dr. O.P. Pareekh, Emeritus Scientist, NRC For Arid Horitculure, Bikaner (Raj.) visited the Centre on 13.02.2002.

- डा. एम.एस. कैरों, भूतपूर्व निदेशक, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र) ने केन्द्र पर दिनांक 13.02.2002 को भ्रमण किया।

- डा. आर. एस. ढाँड़ा, प्रोफेसर, वानिकी एवं प्राकृतिक संसाधन, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना (पंजाब) ने केन्द्र पर दिनांक 06.03.2002 को भ्रमण किया।

- डा. बी. एल. शर्मा, डीन, कृषि कालेज, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान) ने केन्द्र पर दिनांक 06.03.2002 को भ्रमण किया।

- डा. सत्यबीर, डीन, कृषि कालेज चौ0 चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार (हरियाणा) ने केन्द्र पर दिनांक 06.03.2002 को भ्रमण किया।

- डा. एन. एल. जोशी, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय रूक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान) ने केन्द्र पर दिनांक 06.03.2002 को भ्रमण किया।

- डा. एस. बी. त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक, भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी (उ.प्र.) ने केन्द्र पर दिनांक 06.03.2002 को भ्रमण किया।

- डा. एस. टी. नायक, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, वानिकी सुरक्षा विभाग, वानिकी कालेज, सिरसी (कर्नाटक) ने केन्द्र पर दिनांक 06.03.2002 को भ्रमण किया।

- मध्य प्रदेश राज्य के करीब 100 लोग जिनमें ए0डी0एम0, डी0एफ0ओ0, एन0जी0ओ0 ने डी0पी0आई0पी0 कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्र 11.03.2002 में भ्रमण किया।

- Dr. M.S. Kairon, Ex. Director, CICR, Nagpur (Maharashtra) visited the Centre on 13.02.2002.

- Dr. R.S. Dhanda, Professor of Forestry & Natural Resources, PAU, Ludhiana (Punjab) visited the Centre on 06.03.2002.

- Dr. B.L. Sharma, Dean, College of Agril., Raj. Agri. Univ., Bikaner (Raj.) visited the Centre on 06.03.2002.

- Dr. Satya Vir, Dean, College of Agril, CCS HAU, Hisar (Haryana) visited the Centre on 06.03.2002.

- Dr. N.L. Joshi, Principal Scientist, CAZRI, Jodhpur (Rajasthan) visited the Centre on 06.03.2002.

- Dr. S.B. Tripathi, Principal Scientist, IGFRI, Jhansi (U.P.) visited the Centre on 06.03.2002.

- Dr. S.T. Naik, Prof. & Head, Deptt. of Forest Protection, College of Forestry, Siris (Karnataka) visited the Centre on 06.03.2002.

- A team of 100 person including ADM, DFOs, NGOs from M.P. under the DPIP programme visited the centre on 11.03.2002.

- डा. आर. वी. सिंह, भूतपूर्व महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान परिषद, देहरादून (उत्तरांचल) तथा (अध्यक्ष, अनुसंधान सलाहकार समिति, राष्ट्रीय कृषिवानिकी अनुसंधान केन्द्र, झांसी) ने केन्द्र पर दिनांक 20.03.2002 को भ्रमण किया।
- डा. जे.पी. चन्द्रा, भूतपूर्व निदेशक, विमको, रुद्रपुर, उधम सिंह नगर (उत्तरांचल) ने केन्द्र पर दिनांक 20.03.2002 को भ्रमण किया।
- प्रो. के. एस. नीलकंठन, आई, एफ. एस., डीन वानिकी कालेज एवं अनुसंधान संस्थान, कृषि विश्वविद्यालय, मेट्यूंपलायम (तमिलनाडु) ने केन्द्र पर दिनांक 20.03.2002 को भ्रमण किया।
- डा. के. आर. सोलंकी, सहायक महानिदेशक (कृषिवानिकी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने केन्द्र पर दिनांक 20.03.2002 को भ्रमण किया।
- प्रो. बच्चन सिंह, प्रिंसिपल, महाराणा प्रताप मंगला देवी संगणक विज्ञान तकनीकी एवं प्रबंध संस्थान, गोरखपुर (उ.प्र.) ने केन्द्र पर दिनांक 22.03.2002 को भ्रमण किया।

- Dr. R.V. Singh, Ex. Director General, ICFRE, Dehardoon (Uttranchal) and (Chairman , NARCAF Research Advisory Committee) visited the centre on 20.03.2002.
- Dr. J.P. Chandra, Ex. Director, WIMCO, Rudrapur, Distt. U.S. Nagar (Uttranchal) visited the Centre on 20.03.2002.
- Prof. K.S. Neelakatan, (IFS), Dean, Forest College and Research Institute, Tamil Nadu Agricultural University, Mettupalayam (Tamil Nadu) visited the Centre on 20.03.2002.
- Dr. K.R. Solanki, Assistant Director General (AF), ICAR, Krishi Bhava, New Delhi visited the Centre on 20.03.2002.
- Prof. Bachhan Singh, Professor, Maharana Pratap Mangla Devi Instt. of Computer Science Technology & Management, Gorakhpur visited the Centre on 22.03.2002.

प्रकाशक-
निदेशक
रा.कृ.वा. अनु. केन्द्र, झांसी- 284003.
दूरभाष :+91-(0517)-448213, 448214
फैक्स :+91-(0517)-442364
ईमेल एनआरसीएएफ @ हब1. एनआईसी.इन

Published by :
Director
N.R.C.A.F., Jhansi- 284003.
Ph+91-(0517)-448213, 448214
Fax +91-(0517)-442364
E-mail:nrcaf@hubl.nic.in

दिशा निर्देश एवं मार्गदर्शन
डा. प्रसिद्धि राय, निदेशक (कार्यवाहक)
संकलन एवं सम्पादन
ए.के. हाण्डा, अजीत, राजीव तिवारी
एवं के. करीमुल्ला
छायांकन : राजेश श्रीवास्तव
टंकण : हूब लाल

Supervision & Guidance
Dr. P. Rai, Director (Acting)
Compiled & Edited
A.K. Handa, Ajit, Rajeev Tiwari
and K. Kareemulla
Photographs
Rajesh Shrivastava
Typing Hoob Lal

मुद्रक : बीर बुन्देलखण्ड प्रेस, झांसी - फोन नं. □□□□□□

Printed by : Veer Bundelkhand Press, Jhansi - Ph : 440931